फेर मिठू पीरजादे ने, बुरी करी नजर ।
पांच हजार असवार ले दौड़ा, राह में भई फजर ॥१६८॥

उसके बाद मीठू पीरजादे ने महाराजा छत्रसाल जी को पकड़ने की बुरी भावना लेकर आक्रमण किया और उसने ५००० सैनिकों को लेकर रात को चढ़ाई कर दी । प्रातः काल होते ही उसकी सेना का सफाया हो गया ।

तिनको मारा चमारों ने, फिरा मोंह स्याह ले ।
हुई लानत संसार में, काफर होने के ॥१६९॥

जहां से उसने आक्रमण किया था, उसी गांव के चमारों ने मिलकर उसकी सेना को मार डाला । वह बेचारा लज्जित होकर वापिस बादशाह के पास दिल्ली लौट गया । निजानन्द सम्प्रदाय का विरोध करने वाले खुदा के मुनकर लोगों को दुनियां में लानत मिली ।

और पुन जिन जिन करी, तिन तित ही पाई सजा ।
ए काफर लिखे कुरान में, एही लिखी ताले कजा ॥१७०॥

और श्री प्राणनाथ जी के सुन्दरसाथ को जिस-जिस ने जहां-जहां कष्ट पहुंचाया । उसे वहीं उसी समय अपनी करनी के फलस्वरूप दण्ड मिला । ऐसे लोगों को कुरान में काफर कहा है । ऐसे लोगों के भाग्य में संसार में शर्मसार होने, फिटकारे जाने एवं दुःख सहन करने की सजा लिखी है ।

महामत कहें सुनो साथ जी, यह कीमत की बात ।
जब आए तुम परना मिने, तब की ए विख्यात ॥१७१॥

धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे मेरे प्यारे सुंदरसाथ जी ! ये कयामत के समय की बड़ी अनमोल बातें हैं । इसे ध्यान से सुनिए । जब आप सब श्री पद्मावती पुरी धाम पन्ना में आए थे, ये उस समय का वृत्तान्त है ।

(प्रकरण ६०, चौपाई ३५२७)

अब कहूं बीतक परना की, जब बैठे इत आए ।
दज्जाल लगा पुकारने, सो तुमें कहूं बनाए ॥१॥

अब धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! अब हम आपको पन्ना जी की बीतक सुनाते हैं । अब धाम के धनी जी कहते हैं कि जब हम पन्ना जी पधारे तब दज्जाल (अबलीस) की शक्ति ने परमात्मा से मुनकरी करने वाले लोगों के मन में बैठकर अनेकों प्रकार की निंदा की और अनर्गल बातें की । अब वो बातें बताते हैं ।

Nijanand App

जब आए रामनगर से, तब पुरदल खान ।
कुफर दिल में लेय के, जाए कहो राजा के कान ॥२॥

जब हम रामनगर से आए तो पुरदिल खां मन में बेईमानी लेकर आया । उसने रामनगर के राजा को हमारे विरूद्ध बहकाया ।

लिख भेजी पातीय को, तुम क्यों कहत कयामत ।
उनकी मुदत दूर है, आज क्यों बताओ इत ॥३॥

पुरदिल खां ने एक पत्र पन्ना जी में श्री जी को लिखा । जिसमें उसने प्रश्न पूछा कि आप कयामत के समय का एलान (घोषणा) किस आधार पर करते हैं । अभी कयामत तो बहुत दूर है ।

ताकी पाती को जवाब, लिखो श्री जी साहब ।
तुम दूर कौन किताब से, तहकीक किया अब ॥४॥

पुरदिल खां के पत्र के जवाब में श्री जी ने लिखकर भेजा कि आपने किस किताब के आधार पर कयामत के समय को दूर कहा है ?

सो बताओ हमको, जो लिखी बीच फिरकान ।
ओतो हुए जाहिर, सात कयामत के निसान ॥५॥

जो कुरान में कयामत के बारे में लिखा है, आप वो हमें बताओ । कुरान में कयामत के जाहेर होने के जो सात निशान लिखे हैं वो तो जाहिर हो चुके हैं ।

सूरज ऊगा मगरब, बिन रोसनी का अंधेर ।
तुम आंखों ना देखिया, अब नजर करो फेर ॥६॥

पहले कलामे रबानी अल्लाह तआला के इलम का सूर्य इस दुनियां में जहां से निकला, वह मशरक था और मक्के मदीने में महम्मद साहब कुरान को लेकर आए । उसमें अल्लाह तआला और उसके अर्शे अजीम का बयान किया, जो आज दिन तक इस दुनियां के किसी पीर, पैगम्बर या मजहब ने नहीं किया और ११वीं सदी में फरदा रोज (कल) के दिन, ईमाम मेंहदी साहिब का आना और कयामत के जाहेर होने के निशान कहे । इसलिए मुसलमानों का घर मशरक (पूर्व की दिशा) हुआ और हिन्दू कुरान पर बिल्कुल यकीन नहीं लाए थे इसलिए हिन्दुओं का घर मगरब (पश्चिम) कहलाया और अब अल्लाहतआला की हकी सूरत ईमाम मेंहदी साहिब हिन्दू के तन में अपनी उम्मत के साथ अपने अर्श से फर्श पर इस दुनियां में उतरे हैं और जो महंमद साहब ने ११वीं सदी में "मैं भी उनके साथ आऊंगा" कहा था वह भी उनके साथ आए हैं । ईमाम मेंहदी साहिब हकीकत और मारफत का इलमें लदुन्नी साथ लेकर आए हैं जिसमें उन्होंने कुरान के छिपे भेदों के रहस्यों को आ कर खोला है । इसलिए वह अर्शे अजीम का सूर्य हिन्दुओं के घर से निकलने के कारण मगरब (पश्चिम) कहलाया और मुसलमानों के शरीयत के गुलाम (कैदी) होने के कारण से वो उन पर यकीन कभी भी नहीं ला सकेंगे, इसलिए वह सूर्य सदा उनके लिए अंधेरे का रहेगा । अब वही सूरज निकला है तुम अपनी रूह की नजर से देखो और पहचानो ।

Nijanand App

दाभा हुई जाहिर, किया दज्जाल जोर ।
ईमान लिया छीन के, पड़ा दीन में सोर ॥७॥

दाभतूल अर्ज अर्थात् आसुरी स्वभाव वाले मानव जन्म लेंगे और परमात्मा से मुनकर रहेंगे । ऐसे ही लोगों ने मोमिनों को कष्ट पहुंचाने के लिए झगड़े किए । लोगों के मन से खुदा के बारे में यकीन को दूर कर दिया और सत्य धर्म दीने इस्लाम निजानन्द सम्प्रदाय को जाहिर नहीं होने दिया ।

तुम राह देखत हो, आजूज माजूज भए जाहिर ।
देखा लोकों इसलाम के, खाई खलक बाहिर ॥८॥

तुम आज भी कयामत के जाहिर होने की राह देख रहे हो । काल रूप आजूज माजूज के आने की उम्मीद रख के बैठे हो । वो दिन और रात के रूप में जाहिर हो चुके हैं । दीने इसलाम निजानन्द संप्रदाय के लोगों ने मिर्गी की बीमारी आने पर दुनियां को दिन रात मरते रामनगर में देखा है पर रूह की आंखों के अंधे लोग उसे नहीं देख पाए ।

असराफीलें गाइया, कुरान के सुकन ।
सो नीके सुनत हैं, खास गिरोह मोमिन ॥९॥

असराफील ने इमाम मेंहदी साहब के अंदर बैठकर हकीकत और मारफत का कुरान कुलजम स्वरूप के रूप में गाकर जाहेर किया, जिस वाणी को आनंद मंगल से अर्श के मोमिन बड़े यकीन से सुन रहे हैं ।

हजरत ईसा उतरे, आए दावत करी इमाम ।
सो कागद चारों खूंटों, सबको पहुंचाए तमाम ॥१०॥

हजरत ईसा रूह अल्लाह (श्यामा महारानी) देवचन्द्र जी के तन में प्रगट हुए । जिनके आने की दावत सबको ईमाम मेंहदी साहब ने दी और सब जगह चिट्ठियां भेजी । ईमाम मेंहदी साहिब ने अपने आने तथा कयामत के जाहेर होने के निशान चारों दिशा में पहुंचा दिए ।

आज तुम सूते नींद में, तो ऐसा लिखा सुकन ।
बिन नसीब तुम क्या करो, ए काम ईमान मोमिन ॥११॥

आज तक भी आप गफलत की नींद में सो रहे हो । तभी तो आपने पत्र में ऐसी बातें लिखी । बिना नसीब के तुम कर भी क्या सकते हो ? ये कार्य तो सिर्फ अर्श के मोमिनों का है, जो ईमाम मेंहदी साहिब को पहचान कर उन पर यकीन लाएंगे ।

Nijanand App

अब तुमें जाहिर होएगी, हकीकत कयामत ।
आई नजीक तुम पर, जो कही कुरानें साइत ॥१२॥

अब आपको बहुत जल्द कयामत की हकीकत आंखों से नजर आ जाएगी और जो वक्त (घड़ी) कयामत के होने का कुरान में कहा है, वो भी बहुत नजदीक आ चुका है ।

तुमारे अहदी आए थे, बीच रामनगर ।
सो तहकीक कर गए हैं, तुमें तहां भी न पड़ी खबर ॥१३॥

आपके प्रतिनिधि शेख खिदर हमारे पास रामनगर में आए थे, वह स्वयं ये सब सोच-विचार कर निश्चय कर गए थे कि कयामत का समय जो ११वीं सदी लिखा है, यही है । उनसे हकीकत मिलने पर भी आपको पहचान नहीं हो सकी ।

अब तुम हलके बहुत हो, बिना वाउ उड़े ज्यों तूल ।
सो हाल तुमारा होत है, कछू न रहेगा सूल ॥१४॥

अब आप आक के तूल की तरह बिना हवा के उड़ रहे हो अर्थात् आप अपना ईमान खो बैठे हो (नष्ट कर बैठे हो) इसलिए ईमान के बिना तुम्हारी बात की कोई कीमत नहीं रही और आपके विचारों में कोई दम नहीं रहा और अब तुम्हें कभी भी होश नहीं आएगी ।

ए लिख भेजी पाती को, सुनावने जवाब ।
फेर के उत्तर ना दिया, बिन अंकूर न पावे सवाब ॥१५॥

आप श्री जी ने पुरदिल खां को पत्र लिख कर भेजा और जवाब जल्दी देने को कहा । उसने फिर पत्र का उत्तर दिया ही नहीं । परमधाम का अंकूर न होने की वजह से कोई लाभ नहीं ले सका ।

जब मारी ललत पुर, तब हुआ असवार ।
आवत भेंटा राह में, तब भागा हुआ खुवार ॥१६॥

अब ललित पुर पर हमला हुआ । तब पुरदिल खां लड़ने के लिए फौज लेकर सामने आया । मार्ग में महाराजा छत्रसाल से मुठभेड़ हो गई । उसकी ज्यादा फौज होने पर भी बुरी तरह हारा और जलील होकर भागा ।

बाईस असवारों मारी, फौज तीन हजार ।
भागा जाए भेड़ ज्यों, बिना तेज देखा खुवार ॥१७॥

महाराजा छत्रसाल जी के २२ सैनिकों ने उसके ३००० सिपाहियों की सेना को हरा दिया । वह अपने आप को बहुत निर्बल समझ कर भेड़ के समान सिर छिपा कर वापिस भाग गया ।

Nijanand App

फौज लेके आइया, गौर सों करी मुलाकात ।
लड़ाई सफजंग की, नाम निसान ना रही कछू आस ॥१८॥

पुरदिल खां फौज लेकर आ रहा था । रास्ते में उसकी मुठभेड़ गौंडों से हो गई । इस लड़ाई में उसकी सारी फौज का सफाया हो गया । फौज का कोई नामोनिशान भी बाकी नहीं बचा ।

ज्यों फेरून दुआ मूसे की, रोंद नील में हुआ गरक ।
त्यों औरंगजेब पर, फेरा फुरमान हक ॥१९॥

जिस प्रकार मूसा पैगम्बर की अर्जी को सुनकर परमात्मा ने शक्ति से हैरून के द्वारा फैरून की सेना नील नदी में गर्क कर दी थी, उसी प्रकार औरंगजेब बादशाह ईमाम मेंहदी साहब के पैगाम से मुनकरी करने पर नष्ट हो गया ।

त्यों ही मिठू दौड़िया, मारा उन्हें चमार ।
खुवार हुआ दुनियां मिने, छूट गया अख्तयार ॥२०॥

ठीक उसी तरह, मीठू पीरजादा श्री जी को कष्ट पहुंचाने आ रहा था । उसकी फौज को रास्ते में ही चमारों ने मारकर खत्म कर दिया, जिससे उसको बड़ी जलालत हुई और सेनापति पद भी गंवा बैठा ।

भई मुहिम खटोला की, आए ओरछे के ।
उतहीं पटका हुकमें, जड़ समेत उखड़े ॥२१॥

ओरछे के राजा ने खटोला गाँव पर अधिकार करने के लिए हमला किया । वह अपनी सेना समेत वहीं पर मर गया ।

फेर जेतपुर के राजा ने, मुहिम करी ।
ताको खुवार ऐसा किया, पूरी लानत उतरी ॥२२॥

जेतपुर के राजा ने आकर चढ़ाई की । युद्ध में उसको ऐसी हार मिली कि वह बुरी तरह नष्ट हो गया और उसको खुदाई लानत मिली ।

फेर ओरछे के राजा का, आया दौवा खटोला पर ।
खुवार हुआ भली भाँत सों, फिरया स्याह मोंह लेकर ॥२३॥

इसके बाद ओरछे के राजा का भेजा हुआ दौवा खटोला गाँव पर विजय पाने के लिए चढ़ आया । वह हार कर वापिस गया । उसकी बुरी हालत हो गई । बहुत शर्मिन्दा होकर सिर नीचा कर वापिस लौटा।

Nijanand App

फेर राजा के मुलक लिए की, पहुंची खबर नौरंगाबाद ।
सुन साह ने रणमस्त खां को, फौज लेके भेजा विवाद ॥२४॥

जब बादशाह तक समाचार पहुंचा कि महाराजा छत्रसाल ने उसकी सीमा के अंदर घुस कर औरंगाबाद को जीत लिया है तो औरंगजेब बादशाह ने रणमस्त खां को महान सेना देकर छत्रसाल पर चढ़ाई करने भेजा ।

पीछे से पीरजादे में होए के, भई ईसारत रसूल की जब ।
तां समें विचार करके, लिखा किया साह ने तब ॥२५॥

जब मीठू पीरजादा बुरी तरह से अपनी फौज को मरवा कर आया और कालपी के काजियों द्वारा भेजा हुआ महजरनामा दिल्ली पहुंचा और रणमस्त खां ने भी पुरदिल खां द्वारा भेजी हकीकत दिल्ली भेजी तो औरंगजेब बादशाह ने चारों तरफ से रसूल साहब के कुरान में लिखे फुरमान के मुताबिक होता देखकर, विचार करके रणमस्त खां को पत्र लिख कर भेजा ।

सात मजल रनमस्त खां, गया था चल के ले हुकम ।
लिखा परवाने में तुमको, उहां से फेर आइयो तुम ॥२६॥

रणमस्त खां एक महान फौज को लेकर बादशाह के हुकम से सात मंजिल चला गया था । पीछे से दुबारा हुकम गया कि रणमस्त खां ! यहीं से वापिस आ जाओ ।

फेर रनमस्त खां ने, पातसाह के हुकम ।
सात मजल आइया, लिखा के फेर आओ तुम ॥२७॥

फिर रणमस्त खां बादशाह के हुकम के मुताबिक जो सात मंजिल चला गया था । वह लौट कर वापिस दिल्ली आ गया ।

फेर पंडित ओरछे के, चढ़ आए लड़ने ।
तब मारा मुलक ओरछे का, मुस्किल हुआ रखना अपने ॥२८॥

फिर ओरछे के पंडित लोग श्री जी से संघर्ष करने के लिए आये । महाराजा छत्रसाल जी ने ओरछे पर चढाई कर दी । ओरछे का सारा क्षेत्र नष्ट होने लगा तो वहां के लोगों को अपने आप को बचाना भी भारी हो गया ।

दौआ और पंडित पर, भया कसाला जोर ।
विघन पड़े उतहीं, किया दज्जालें सोर ॥२९॥

इस प्रकार ओरछे के राजा के भेजे हुए दौवा और पंडित पर बहुत कष्ट आए । उनको वहीं अपने स्थान पर ही बहुत कष्ट आए और उनकी बुरी हालत हो गई ।

Nijanand App

फेर राणा परताप सिंह नें, बुरी करी नजर ।
तो ख्वारी आपस में भई, है कयामत की फजर ॥३०॥

राणा प्रताप सिंह ने भी महाराजा छत्रसाल के प्रति बुरे विचार किए । इसलिए वो अपने पड़ौसी राजाओं के आपसी कष्ट में ही नष्ट हो गया ।

जिनों जिनों जैसी करी, तिन सजा पाई तित ।
जैसी जैसी जिनों करी, ताए मारा उसी बखत ॥३१॥

जिन बेईमान दज्जाल रूप लोगों ने जैसा व्यवहार किया, उन्हें वहीं तुरन्त अपनी करनी का फलरूप दण्ड मिला । जिस किसी ने जैसा दुर्व्यवहार करने का संकल्प लिया, उनको परमात्मा की कृपा से मार खानी पड़ी और नष्ट होना पड़ा ।

मरनें के बखत में, दज्जाल पटकत हाथ ।
खुवार किया संसार को, जादा जो उनके साथ ॥३२॥

दज्जाल, अबलीस नष्ट होने के वक्त हाथ-पांव पटक रहा था । उसको सहारा देने वाले लोगों ने दुनियां के लोगों को बहुत कष्ट दिए ।

दज्जाल की छाती कही, दूध पीवे तिन सें ।
सो खुवारी उन से, रहे परेसानी में ॥३३॥

बेईमानी का सहारा लेकर जीने वाले लोग दूसरों को कष्ट देते हैं । अन्त में वह स्वयं परेशान होते हैं और उन्हें भटकना पड़ता है ।

उजाड़ सब सहरों का, काहू होए न आराम ।
सब परेसान होएंगे, अपने अपने काम ॥३४॥

दज्जाल कलयुग के आसुरी स्वभाव के आधीन लोग जहां रहेंगे, वह शहर कभी सुख चैन से नहीं बसेंगे। जल्दी उजड़ जाएंगे । उल्टे-सीधे काम करने वालों का अंत परेशानी ही है ।

बलाए जो उतरी, सो दफे होए मोमिनों की बरकत ।
सो ठंडी हो जात है, पड़े उम्मत दज्जाल तित ॥३५॥

मोमिनों पर जहां भी कोई कष्ट आया या उन पर कोई बला आई तो मोमिनों के ही प्रताप से वह दूर हो गई । जहां-जहां मोमिनों के चरण पड़े, दज्जाल का प्रभाव नष्ट हो जाता था ।

Nijanand App

पनाह बीच मोमिन रहे, हक सुभान नजर ।
इनों को लेलत कदर की, होए गई फजर ॥३६॥

धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी महाराज अपने अंग मोमिन ब्रह्मसृष्टियों को हमेशा अपनी मेहर की दृष्टि में ही रखते हैं । इनके लिए हकीकत और मारफत की कुलजम स्वरूप की वाणी आ जाने से लैल-तुल कद्र जागनी ब्रह्मांड में सब ग्रन्थों के छिपे भेदों के रहस्य खुल जाने से सब पहचान हो गई है ।

ए बैठे अपने ठौर में, करते हैं जिकर ।
फिरस्ते चौकी देत हैं, बलाए उड़ावें कर फिकर ॥३७॥

मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) अपने ठिकाने पर रहते हुए भी अपने धाम के धनी श्री राज जी महाराज की लीलाओं की चर्चा करते रहते हैं और श्री राज जी महाराज ने इनकी निगरानी के वास्ते जबराईल और असराफील दो अखण्ड फरिश्ते भेजे हैं, जो सब शक्तियां रखते हैं, ये इनका पहरा देते रहते हैं और बड़ी सावधानी के साथ इन पर आने वाली विपदाओं को समाप्त कर देते हैं ।

प्रमाण : असराफील जबराईल, भेज दिया आमर ।
निगहबानी कीजियो, मेरे खासे बंदो पर ॥

(खुलासा, प्रकरण ४, चौपाई ६०)

हकें दई मोमिनों को, अपनी जो पहिचान ।
नबूबत रसालत इनको, पूरा पाया ईमान ॥३८॥

धाम के धनी अक्षरातीत श्री राज जी महाराज ने इन मोमिन सुंदरसाथ को अपनी निसबत होने के कारण से अपनी हकीकत और मारफत के ज्ञान कुलजम स्वरूप की वाणी से अपनी पहचान करा दी है। जिससे मोमिनों को अपने धनी पर पूरा ईमान आ गया है और अब सारे संसार को अक्षरातीत पारब्रह्म की पहचान कराने वाले तथा ईमाम मेंहदी साहब के आने तथा कयामत के जाहिर होने का संदेश देने वाले यही हैं । ये महान शोभा (साहेबी) इनको ही खुदा ने बख्शी है ।

एही सुंनत जमात हैं, गिरोह रब्बानी जे ।
इनको दाना हकें किया, अपना इलम दे ॥३९॥

मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) ही कुलजम स्वरूप की वाणी को सुनकर ईमान लाने वाली सुंनत जमात है । यही अर्शे अजीम से उतरने वाले गिरो मोमिन हैं । यही खुदा की निसबती जमात है । इनको ही अक्षरातीत पारब्रह्म ने अपनी निजबुध की वाणी कुलजम सरूप देकर इनको सबसे अधिक चतुर, प्रवीण बना दिया है ।

Nijanand App

साहिदी खुदाए की, कही गिरोह देवन हार ।
एही अरस अजीम से, ए सब खबरदार ॥४०॥

पारब्रह्म अक्षरातीत की साहेबी की गवाही देने वाली यही गिरो जमात मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) हैं। ये मोमिन ही अक्षरातीत के परमधाम से उतरे हैं और यही परमधाम के २५ पक्षों को जानते हैं। यही सबको क्षर, अक्षर, अक्षरातीत की पहचान करा सकते हैं और ये ब्रह्मसृष्टियों का समूह ही संसार के सब ग्रंथों के छुपे भेदों के रहस्य खोलने में निपुण है।

जबराईल वकीली, करत सब ऊपर ।
साफ दिल रखे इनको, सब पावत ए पटन्तर ॥४१॥

अक्षरातीत पारब्रह्म ने अपनी जाग्रत बुद्ध का फरिश्ता जबराईल इनके साथ भेज दिया है। जिससे मोमिनों के दिल में किसी प्रकार से भी संसार के ज्ञान को देखकर संशय न आ जाए और जाग्रत बुद्ध के तारतम ज्ञान से ही मोमिन क्षर, अक्षर, अक्षरातीत और संसार के ग्रन्थों के छिपे भेदों के रहस्यों को खोल सकते हैं।

सात निसान बड़े कहे, जिनसे होए कयामत ।
सो इतसे पावे खलक, जो इत कादर बकसत ॥४२॥

ईमाम मेंहदी साहब के आने और कयामत के जाहिर होने के जो सबसे बड़े सात निशान कयामत के कहे हैं, उन सातों निशानों के रहस्यों का ज्ञान सारी दुनियां को मोमिन ही जाहिर करेंगे। उनको खोलने के लिए हकीकत और मारफत की कुलजम स्वरूप की वाणी और परमधाम की सब न्यामतें पारब्रह्म ने इनको ही बख्शी हैं।

विरोध सारी विस्व का, भान किया एक दीन ।
सबकी सबों समझाए के, एही देवे आकीन ॥४३॥

सारे संसार के धर्मों के फैले हुए विरोधों को समाप्त करने के लिए कुलजम स्वरूप की वाणी से, हिन्दुओं को हिन्दुओं के ग्रन्थों से एक पारब्रह्म की पहचान और मुसलमानों को उनके कुरान से "खुदा सबका एक है" इसकी पहचान करा कर एक ही दीने इसलाम निजानन्द सम्प्रदाय पर यकीन दिलाने की शक्ति कुलजम स्वरूप की वाणी मोमिन ब्रह्मसृष्टियों के ही पास है। जिससे सारी दुनियां "परमात्मा सब का एक है" और "धर्म भी सबका एक है" को मानेगी।

रूहें फिरस्ते उतरे, सोई अरस वारस ।
वानी अक्षरातीत की, इनों से सुने सरस ॥४४॥

रूहें मोमिन ब्रह्मसृष्टि और फरिश्ते ईश्वरी सृष्टि ये दोनों गिरोह परमधाम और अक्षरधाम से उतरे हैं और ये ही उस अखण्ड परमधाम के मालिक हैं। अखण्ड परमधाम और अक्षरातीत की पहचान कराने वाली कुलजम स्वरूप की वाणी भी इनके ही पास है जो सारे संसार के लोग इनकी सोहबत से सुन रहे हैं। उस परमधाम और अक्षरातीत पारब्रह्म की पहचान जो आज दिन तक कोई भी किसी को करा नहीं सका, वह मोमिनों के द्वारा इस वाणी से हो रही है।

Nijanand App

आठों भिस्त आखर की, पाई इनों की बरकत ।
आखर खाविन्द करेगा, इन खातर उठे कयामत ॥४५॥

उस अखण्ड परमधाम से मोमिनों (ब्रह्मसृष्टि) के इस दुनियां में आने के कारण से ही इस संसार के सब मिट जाने वाले जीवों को कयामत के दिन आखिरी वक्त में खुद ईमाम मेंहदी साहब श्री प्राणनाथ जी न्यायाधीश वन कर न्याय के तख्त पर विराजमान होंगे और सब जीवों को अपनी करनी के अनुसार आठ बहिश्तों में अखण्ड करेंगे । वो सब मोमिनों की कृपा दृष्टि से ही बख्शी जाएगी ।

इनों की सिफत सब्द में, आवत नहीं जुबाए ।
त्रिगुन रोए पीछे फिरे, इन की खूबी सुन श्रवनाए ॥४६॥

मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) जो अक्षरातीत पारब्रह्म के ही अंग स्वरूप हैं, इनकी महिमा का वर्णन शब्दों में नहीं हो सकता । त्रिदेवा (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) भी इनके दर्शनों के लिए, इनकी चरण-धूलि लेने के लिए, इनकी अखण्ड परमधाम की वाणी सुनने के लिए, इनकी पहचान के लिए खोज खोज कर थक गए अर्थात् रो-रो कर परेशान हुए और वापस लौट आए ।

चौपाई : चरन रज ब्रह्मसृष्टि की, ढूंढ थके त्रैगुन ।
कई विध करी तपस्या, यों केहेवत वेद वचन ॥

(खुलासा प्रकरण १३ चौपाई ५५)

महामत कहें ए मोमिनों, याद करो सुकराना ।
मेहर करी तुम ऊपर, तुम्हारी सिफत करे सुभाना ॥४७॥

अब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! श्री राज जी महाराज की इस अपार मेहर को पल-पल याद करते हुए कोटि-कोटि आभार प्रकट करो कि धाम धनी के साथ तुम्हारी निसवत होने के कारण से तुम्हारे ऊपर अखण्ड परमधाम की मेहर बरस रही है । तुम श्री राज जी महाराज के इतने लाडले अंग हो कि धनी खुद तुम्हारी सिफत कर रहे हैं ।

चौपाई : लाडलियां लाहूत की, जाकी असल चौथे आसमान ।
बड़ी बड़ाई इनकी, जाकी सिफत करे सुभान ॥

(किरंतन प्रकरण ७१, चौपाई १)
(प्रकरण ६१, चौपाई ३५७४)

नौतनपुरी से लेकर पद्मावती पुरी तक बीतक सम्पूर्ण हुई ।

Nijanand App